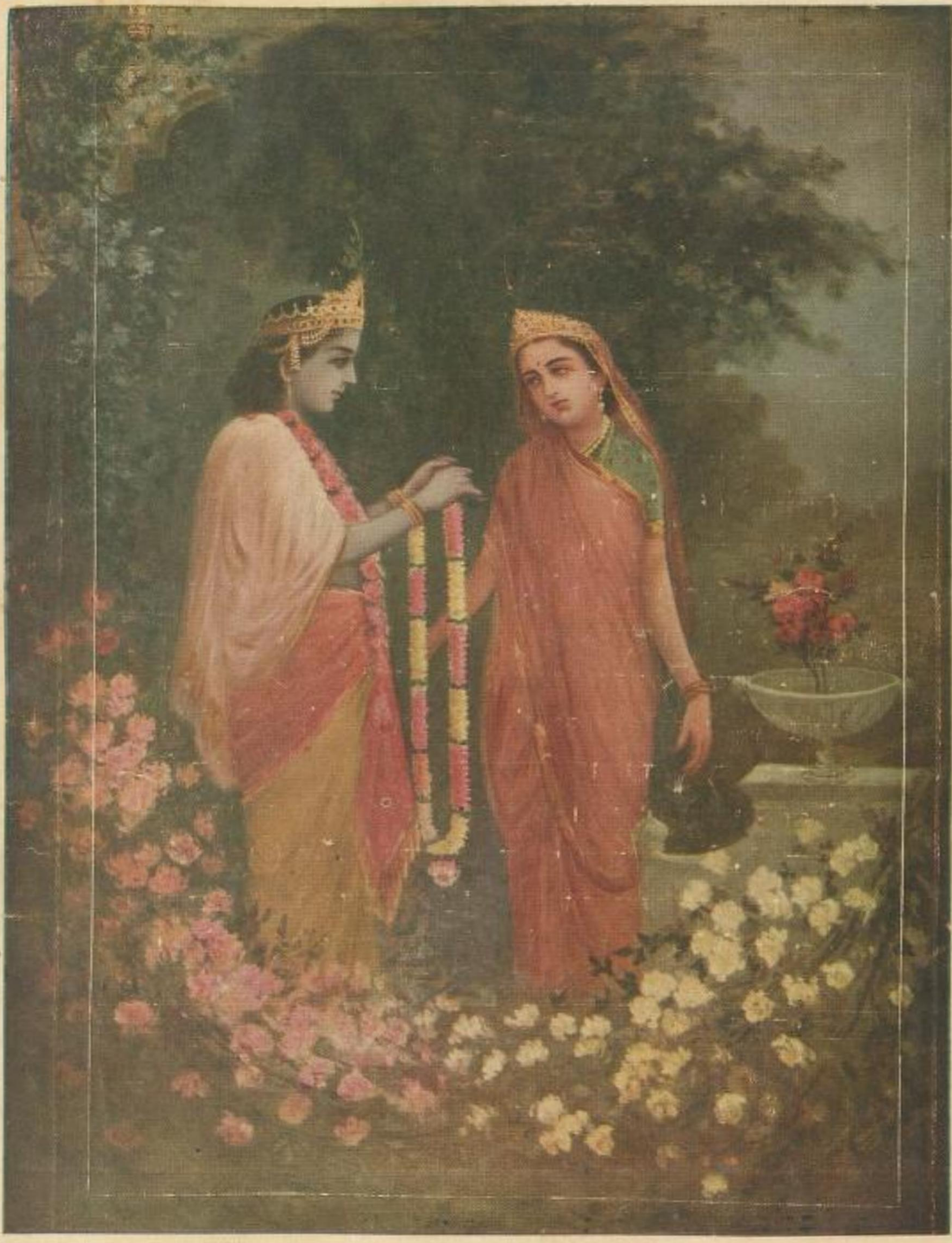
अप्रैल, १९३३

चाँद

[वर्ष ११, खण्ड १
सं० ६, पू० सं० १२६]



वार्षिक चन्दा ६॥)
छः माही चन्दा ३॥)

सम्पादक :—
मुन्शी नवजादिकलाल श्रीवास्तव

विदेश का चन्दा ८॥)
इस अङ्क का मूल्य ॥=)

विषय-सूची

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	हास्य-रुदन (कविता)	[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]	६३३
२	सम्पादकीय विचार	...	६३४
३	दश वर्ष पूर्व	...	६४१
४	शराबी (कहानी)	[श्री० श्यामसुन्दर खत्री, बी० ए०]	६४३
५	राजा मेहरा	[श्री० अन्तर्वेदी]	६५२
६	निराश जीवन (कविता)	[श्री० शिवप्रसाद]	६५५
७	अङ्गरेज़ों में अन्ध-विश्वास	[श्री० सत्यभक्त जी]	६५६
८	मँगरू का भार (कहानी)	[श्री० ललितकिशोर सिंह, बी० एस्-सी०]	६६२
९	अन्वेषण (कविता)	[श्री० शारदाप्रसाद भण्डारी]	६७०
१०	कविता में अस्पष्टता	[श्री० शान्तिप्रिय द्विवेदी]	६७१
११	फूलबाला (कविता)	[श्री० केदारनाथ मिश्र, "प्रभात"]	६७६

राजा मेहरा

[श्री० अन्तर्वेदी]

लखनऊ के विख्यात दानी और उदार-हृदय मुसलमान शासक नवाब आसिफ़ुद्दौला के दरबारियों में राजा मेहरा नाम के एक सज्जन रहते थे। ये नवाब के निकट पार्श्ववर्तियों में थे और इन पर उसकी विशेष कृपा-दृष्टि भी रहती थी।

राजा मेहरा स्वयं भी बड़े उदार, दानी और धर्मात्मा पुरुष थे। उनकी बनवाई हुई अन्यान्य कीर्त्तियों के सिवा लखनऊ में राजा मेहरा की हवेली और इमामबाड़ा आज भी मौजूद है।

नवाब आसिफ़ुद्दौला का ज़माना 'हातिमे सानी का ज़माना' कहा जाता है। उदारता, गुणग्राहिता और दानशीलता में नवाब आसिफ़ुद्दौला वास्तव में बेजोड़ था। धार्मिक कट्टरता और जातिगत भेद-भाव का उसमें नितान्त ही अभाव था। वह गुणों का प्रेमी था, गुणियों का आदर करना जानता था। उसकी दृष्टि में हिन्दू-मुसलमान और ऊँच-नीच का कोई भेद-भाव न था। वह किसी के ज़रा से सद्गुण पर उसे मालामाल कर देता था। किसी कवि या शायर की एक चुटीली उक्ति पर उसे अयाची कर देता था। उसके शासनकाल में लखनऊ कवियों, शायरों, गायकों, मदारियों, कारीगरों और पहलवानों का प्रधान केन्द्र बना था। नवाब आसिफ़ुद्दौला की उदारता का हाल सुन कर देश-देश से गुनी-ज्ञानी आकर लखनऊ में बस गए थे। उसके राज्य में हिन्दू-मुसलमान और ईसाई सभी सुखी थे। उसकी दानशीलता के सम्बन्ध में यह कहावत प्रचलित थी कि 'जिसको न दे मौला, उसे दे आसिफ़ुद्दौला!'

ऊँचे-ऊँचे सरकारी ओहदों पर हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। एक ओर सरफ़राज़ुद्दौला, नवाब हसन रज़ा ख़ाँ, नवाब मुख़्तारुद्दौला, सय्यद मीरतक़ी ख़ाँ, नवाब हैदरबेग ख़ाँ आदि मुसलमान राजकर्मचारी थे, तो दूसरी ओर राजा टिकैतराय, राजा झाऊलाल और राजा मेहरा आदि हिन्दू राजकर्मचारी भी मौजूद थे। नवाब बहादुर की तरह राजा टिकैतराय और राजा झाऊलाल भी बड़े दानी और उदार थे। ये दोनों ही धर्मात्मा राजे साल में लाखों रुपए धर्म-कार्य में ख़र्च करते थे। राजा टिकैतराय और राजा झाऊलाल की बनवाई हुई धर्मशालाएँ, कुएँ, तालाब, मन्दिर और मसजिदें आज भी उनकी पवित्र स्मृति-स्वरूप मौजूद हैं। इसी तरह राजा बलभद्रसिंह नाज़िम भी बड़े शाहख़र्च और उदार थे। नवाब आसिफ़ुद्दौला के ज़माने में मुसलमान हिन्दुओं की होली और दीवाली पर आनन्द मनाते थे और हिन्दू उनके मुहर्रम में आँसू बहाते थे। होली और दीवाली पर नवाब-सरकार की ओर से हर साल साठ लाख रुपए ख़र्च होते थे। इन दोनों त्यौहारों के समय हफ़्तों नहीं, महीनों तक एक विचित्र चहल-पहल मची रहती थी।

इसी उदार-हृदय दानी मुसलमान नरेश ने अपनी पालकी ढोने वाले एक कहार की सेवा से प्रसन्न होकर, उसे लाखों रुपए की जागीर, महल, नक़दी और हाथी-घोड़े के साथ राजा की पदवी प्रदान की थी, जो अन्त में 'राजा मेहरा' के नाम से विख्यात हुआ। राजा मेहरा के सम्बन्ध में एक बड़ी मज़ेदार कहानी प्रचलित है।

उन दिनों पालकी सर्वश्रेष्ठ और बड़ी शानदार सवारी समझी जाती थी। राजा, महाराजा, रईस और ज़मींदार अधिकतर पालकियों पर ही सवार होते थे। ऐसा कोई बड़ा आदमी न होता था, जिसके पास एक-दो पालकियाँ और उन्हें ढोने वाले चार-छः कहार नौकर न हों। शहरों में इक्कों और ताँगों की तरह किराए पर पालकी और कहार मिला करते थे। नवाब के दरबारी अपनी-अपनी पालकियों पर ही दरबार में हाज़िरी देने आया करते थे। नवाब बहादुर की भी प्रधान सवारी पालकी

ही थी। यहाँ तक कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लखनऊ के रेज़ीडेण्ट मि० जॉन चेरी भी नवाब के दरबार में आते थे, तो पालकी पर ही आते थे। पालकी की उन दिनों बड़ी महिमा थी।

एक दिन दरबार में सवारियों की चर्चा चल पड़ी। किसी ने घोड़े की तारीफ़ की और किसी ने हाथी की। ऊँट, बहली और बैलगाड़ी का भी ज़िक्र आया। परन्तु अन्त में पालकी का लोहा सबको मानना पड़ा।

रेज़ीडेण्ट ने कहा—हुज़ूर, मैं पालकी की ख़ूबी का क़ायल हूँ। बेशक वह बड़े आराम की सवारी है। परन्तु हमारे देश में तो आजकल बग्घियों का बड़ा रिवाज है। एक से एक बढ़ कर सुन्दर और तरहदार बग्घियाँ वहाँ तैयार होती हैं। मैंने हाल में अपनी सवारी के लिए एक बहुत ही अच्छी बग्घी इङ्गलैण्ड से मँगवाई है। दो निहायत अच्छे घोड़े भी रख लिए हैं। हुज़ूर एक दिन उस पर सवार हों तो स्वयं अनुभव करेंगे कि आराम और शीघ्र-गमन के विचार से बग्घी और पालकी में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। जितनी देर में पालकी चार क़दम जायगी, उतनी देर में बग्घी कोस भर निकल जाएगी।

नवाब का कहार सुरजी पास ही खड़ा था और बड़े ध्यान से रेज़ीडेण्ट साहब की बातें सुन रहा था। रेज़ीडेण्ट का कथन समाप्त होने पर नवाब बहादुर ने सुरजी की ओर देखा। उसने हाथ जोड़ कर रेज़ीडेण्ट साहब से कहा—हुज़ूर, जैसे घोड़ों में बाज़ अड़ियल टट्टू होते हैं, वैसे ही कहारों में भी सात जातियाँ होती हैं। जो अच्छी जाति के कहार हैं, उनकी पालकी बग्घी से चार क़दम आगे जाती है, चढ़ने वाले के पेट का पानी तक नहीं हिलता और न पैरों के चाप की आवाज़ आती है। सवार को इतना आराम मिलता है कि नींद आने लगती है। परन्तु बग्घी की खड़खड़ाहट, घोड़ों की टापों का शब्द और सड़क की विषमता के कारण लगने वाले धक्के अच्छे स्वस्थ आदमी को भी बीमार डाल देते हैं।

रेज़ीडेण्ट ने कहा—अच्छा, यह तो बताओ, तुम नवाब साहब का बोझ हमारी बग्घी के बराबर ले जा सकते हो?

सुरजी ने उत्तर दिया—नवाब बहादुर के इक़बाल से आशा है कि दो कोस तक तो पालकी आपकी बग्घी से दो-चार क़दम आगे ही रहेगी। बस, इससे अधिक शेख़ी यह सेवक नहीं बघाड़ना चाहता।

रेज़ीडेण्ट ने कहा—सुरजी, यह तो तुम हँसने की बातें करते हो। भला, घोड़ों की बराबरी आदमी कैसे कर सकता है। शायद तुमने अच्छे घोड़े नहीं देखे।

सुरजी ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया—सरकार, सेवक ने सब कुछ देखा है। अरबी घोड़े भी अच्छे कहारों की बराबरी नहीं कर सकते।

रेज़ीडेण्ट ने कहा—अच्छा, तुम हमारी बग्घी को एक बार देख लो, तब अपने विचार प्रकट करना।

सुरजी बोला—नवाब साहब की बदौलत मैंने बहुत-कुछ देखा-सुना है। आपको विश्वास नहीं होता तो एक दिन बग्घी और नवाब बहादुर के 'बूचे' को एक साथ ही छोड़ कर देख लीजिए।

रेज़ीडेण्ट साहब सुरजी की बातें सुन कर हँस पड़े और नवाब से कहा—हुज़ूर, दिल्लगी ही सही। एक रोज़ आप बूचे पर सवार हों और मैं अपनी बग्घी पर बैठूँ। दोनों का मुक़ाबला करके देखा जाए।

नवाब ने अविश्वासपूर्वक कहा—ऐसा नहीं हो सकता। भला, कहार बेचारे घोड़ों का मुक़ाबला कैसे कर सकते हैं!

सुरजी ने हाथ जोड़ कर कहा—हुज़ूर, एक बार अवश्य परीक्षा करें।

नवाब बोले—परन्तु अगर तुम हार गए तो तुम्हारी सज़ा?

सुरजी ने कहा—हुज़ूर, जो चोर की सज़ा वही मेरी सज़ा।

नवाब ने कहा—अच्छा, अगले सोमवार को रमने के मैदान वाली सड़क पर दोनों का मुक़ाबला हो जाए।

उस समय लखनऊ में यही एक चौड़ी सड़क थी। बात पक्की हो गई। परन्तु नवाब को विश्वास न था कि सुरजी इस दौड़ में विजयी होगा। इसलिए रेज़ीडेण्ट के चले जाने पर उन्होंने कहा—तुमने यह क्या मूर्खता कर डाली?

सुरजी ने विश्वासपूर्वक कहा—हुज़ूर, अगर हार जाऊँगा तो शहर में मुँह नहीं दिखाऊँगा।

नवाब ने कहा—तुम तो अपना मुँह काला करके शहर से चले जाओगे, परन्तु मुझे कितना लज्जित होना पड़ेगा।

सुरजी ने कहा—लज्जित होना पड़ेगा हुज़ूर के शत्रुओं को। मैं श्रीमान के चरणों पर उत्सर्ग न हो गया तो श्रीमान को लज्जित न होना पड़ेगा।

दौड़ के लिए केवल एक कोस का स्थान निर्दिष्ट हुआ। सड़क के ढेले और कङ्कड़ आदि साफ़ करा दिए गए और उस पर सुर्ख़ी बिछा दी गई। कहारों को पाला बदलने के लिए जहाँ-तहाँ निशान भी लगा दिए गए।

सुरजी ने अपनी मदद के लिए आठ कहार चुन लिए और उन्हें आध-आध मील के अन्तर पर खड़ा कर दिया।

सोमवार को नौ बजे रेज़ीडेण्ट साहब अपनी बग्घी पर सवार होकर आ गए। थोड़ी देर के बाद नवाब साहब की सवारी भी आ गई। नवाब साहब का 'बूचा' बग्घी के बराबर रक्खा गया। सुरजी अपने कई साथियों को लेकर एक मील के अन्तर पर खड़ा हुआ। दूसरे कहारों ने 'बूचा' उठाया। साहब ने घोड़ों की रास ढीली की और कहारों ने भी दुलकना आरम्भ किया। आध कोस तक नवाब का बूचा घोड़ों के साथ-साथ रहा; न एक क़दम आगे न एक क़दम पीछे। आध कोस पर सुरजी ने अपने साथियों के साथ पल्ला बदला और बूचा लेकर हवा हो गया। साहब ने घोड़ों को शिशकारना आरम्भ किया, परन्तु वे सुरजी को नहीं पा सके। सुरजी ने बग्घी से पहले ही निर्दिष्ट स्थान पर ले जाकर सवारी रख दी और ईश्वर का नाम लिया।

सड़क के दोनों किनारों पर तमाशा देखने वालों की भीड़ लगी थी। सारा लखनऊ यह अजीब दौड़ देखने के लिए टूट पड़ा था। वाह-वाह की आवाज़ से आकाश गूँज उठा। रेज़ीडेण्ट साहब आश्चर्य में पड़ गए और नवाब को सलाम करके अपनी कोठी पर चले गए।

नवाब बहादुर उसी बूचे पर अपने महल में आए और प्रसन्न होकर सुरजी को 'राजा' की पदवी प्रदान की। साथ ही बहुत से घोड़े, हाथी, झालरदार पालकी, नौकर-चाकर और सवारों का एक रिसाला दिया। साथ ही ख़र्च के लिए यथोचित वेतन नियत कर दिया और नाम रख दिया, राजा सूर्यनारायण। रेज़ीडेण्ट साहब ने भी काफ़ी इनाम-इकराम दिया। परन्तु सुरजी का यह सम्मान दरबार के अन्य राजाओं तथा सरदारों को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने नवाब बहादुर की ख़ातिर से इसका विरोध तो नहीं किया, परन्तु इस पर कोई प्रसन्नता नहीं प्रगट की और ईर्ष्यावश होकर उसे 'राजा मेहरा' कहने लगे। कहारों ने भी राजा सूर्यनारायण की पालकी उठाने से इनकार कर दिया था। परन्तु उसने उन्हें समझा-बुझा कर राज़ी कर लिया।

'राजा मेहरा' कुछ पढ़े-लिखे और दरबार के क़ायदे-क़ानून से वाक़िफ़ थे। राजा की पदवी प्राप्त कर लेने पर उन्होंने फ़ारसी और थोड़ी सी अरबी तथा संस्कृत का भी अभ्यास किया। कुछ दिनों के बाद ही नवाब ने इन्हें अपने 'पुस्तकालय' का दारोग़ा मुक़र्रर कर दिया, इससे उन्हें विद्या-चर्चा के लिए सुन्दर सुयोग प्राप्त हो गया।

नवाब बहादुर ने गञ्ज नामक मुहल्ले में राजा मेहरा के लिए एक सुन्दर हवेली बनवा दी थी और उसी के आस-पास राजा मेहरा ने अपने लिए कुछ जायदाद भी मोल ले ली थी। अन्त में नवाब ने रूमी दरवाज़ा के पास उनके रहने के लिए एक दूसरा सुन्दर मकान बनवा दिया और वे उसी मकान में आजीवन रहे। यह इमारत अभी तक मौजूद है।

राजा मेहरा जाति के मल्लाह थे। बड़े बुद्धिमान और विचारशील आदमी थे। उनकी जाति वालों ने उन्हें अपना सरपञ्च नियुक्त किया था। उच्च पद प्राप्त करने पर भी वे अपनी बिरादरी वालों की बड़ी ख़ातिर करते थे और उनकी भलाई के लिए नवाब साहब से सदैव सिफ़ारिश किया करते थे।

राजदरबार में उनका यथेष्ट मान था। वे झालरदार पालकी में सवार होकर नवाब के दरबार में जाते थे और दूसरे सरदारों के बराबर के आसन पर बैठते थे। बड़े चतुर और हिसाब-किताब में इतने चौकस थे कि राजा झाऊलाल कभी-कभी हँसी में उन्हें 'कायस्थ का बच्चा' कहा करते थे।

एक बार एक मुसलमान मन्त्री ने नवाब साहब से कहा कि हुज़ूर, आपने एक नीच जाति के मनुष्य को इतना उच्च पद प्रदान करके अपने दरबार के सरदारों को दुखी किया है। वे लोग सदैव उससे जला करते हैं।

नवाब ने कहा, जलने दो। मैंने उसके गुणों का आदर किया है, जो मेरा कर्तव्य था। उच्च वंश में जन्म लेने से ही कोई उच्च नहीं हो जाता। जिसमें सद्गुण होते हैं, वही उच्च पद प्राप्त करता है। सुरजी ईमानदार

है, हमारे राज्य का शुभचिन्तक और धर्मभीरु है। सच बोलता है, झूठी ख़ुशामद नहीं करता और न कभी कोई अन्याय करने की सलाह देता है।

एक दिन नवाब ने कहा—मैंने कहारों का नाच नहीं देखा है। राजा मेहरा ने कई सुन्दरी स्त्रियों को कहारों का नाच, उनका गाना और 'हुड़क' बजाना सिखाया और एक दिन नवाब के सामने उन्हें उपस्थित किया। नवाब बहुत प्रसन्न हुए और उस नाच का नाम 'कहरवा' नाच रख दिया। इस नाच का इतना प्रचार हुआ कि तवायफ़ों और नक़्क़ालों (भाँड़ों) ने भी उसकी नक़ल की।

राजा मेहरा ने बड़ी लम्बी आयु पाई थी। नवाब सआदतअली ख़ाँ और नवाब नसीरुद्दीन हैदर के काल तक जीवित रहे। नवाब आसिफ़ुद्दौला की तरह ही उनके उत्तराधिकारी नवाबों के दरबार में भी राजा मेहरा का बड़ा मान था। नवाब आसिफ़ुद्दौला की तरह ये भी गुणियों का बड़ा आदर करते थे। मशायरों में बड़े शौक़ से जाते थे और कवियों को अपने घर बुला कर उनका सम्मान करते थे। आग़ा मीर नाम के एक कविता-प्रेमी सरदार से इनकी गहरी मित्रता थी। एक बार लखनऊ के विख्यात कवि 'नासिख़' ने आग़ा मीर की प्रशंसा में एक कविता लिखी। राजा मेहरा ने आग़ा मीर से उन्हें सवा लाख रुपए इनाम दिलवाए। ये स्वयं भी कवियों को बहुत रुपए दिया करते थे। इसके सिवा यदि कोई भी शरीफ़ आदमी इनके पास अपनी किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जाता, तो कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटता था। चुपके से जो कुछ बन पड़ता, उसे दे देते और कहते, मैं इस योग्य नहीं हूँ कि आपकी कुछ सेवा कर सकूँ। पान खाने के लिए जो कुछ बन पड़ा है, सेवा में उपस्थित किया है। इसे स्वीकार कीजिए। परन्तु इसका कहीं ज़िक्र न कीजिएगा।

अपने काम के लिए राजा मेहरा किसी को कष्ट देना नहीं चाहते थे। एक बार नवाब आसिफ़ुद्दौला ने कहा कि हमारी इच्छा है कि तुम अपना मकान छोड़ कर मेरे पास ही चले आओ। हमारे महल के आस-पास जो जगह पसन्द करो, तुम्हारे लिए मकान बनवा दिया जाए।

राजा ने हाथ जोड़ कर कहा—हुज़ूर, राजमहल के आसपास भले आदमियों की बस्ती है। किसी भले आदमी का मकान तुड़वा कर मेरे लिए मकान बनेगा, तो मैं उसमें सुख से न रह सकूँगा। जहाँ रहता हूँ, वहीं अच्छा है। अथवा फिर किसी ऐसी जगह बनवा दीजिए, जहाँ रहने से किसी को कष्ट न हो।

नवाब ने ऐसा ही किया और नदी किनारे ज़नाना-घाट के पास एक मकान बनवा दिया, जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है।

नवाब आसिफ़ुद्दौला को मुर्ग़बाज़ी का बड़ा शौक़ था। इसलिए राजा मेहरा ने भी बहुत से लड़ाके मुर्ग़ पाल रक्खे थे। मुहर्रम में ताज़ियादारी भी करते थे। परन्तु अपने धार्मिक विचारों पर दृढ़ थे।

राजा मेहरा अपनी जाति के सच्चे सेवक थे और उसकी भलाई करने से कभी भी पराङ्मुख नहीं होते थे।

निराश जीवन

[श्री० शिवप्रसाद]

सिहर उठते हैं निर्बल मन।
निराशा है जिनका जीवन॥

उन्हीं के जीवन का ले सार।
रात्रि लेती रहती अवतार॥

हँसा करते तारक समुदाय!
यही जग का जीवन है हाय!!

क्रमाङ्क लेख	लेखक	पृष्ठ
३०—बन्दी	श्री० नर्मदाप्रसाद जी खरे	८५
३१—बुधिया	श्री० ज़हूरबख़्श जी, हिन्दी-कोविद ...	५२५
३२—बेटों वाली विधवा	श्री० प्रेमचन्द जी	१५
३३—भारतीय स्त्रियों की वीरता	श्री० सुरेन्द्र शर्मा	३१३
३४—मन का पाप	श्री० ऋषभचरण जैन	१९०
३५—महात्मा बुद्ध और उनकी शिक्षा ...	श्री० अन्तर्वेदी	२७
३६—महाराष्ट्र के महात्मा	श्री० सुरेन्द्र शर्म	६६
३७—महात्मा निटशे	श्री० लाला हरदयाल, एम० ए०; अनुवादक, श्री० छुगनलाल जी अरोड़ा	२२०
३८—मँगरू का भार	श्री० ललितकिशोरसिंह, बी० एस-सी० ...	६६२
३९—राजा मेहरा	श्री० अन्तर्वेदी	६५२
४०—वर्ण-व्यवस्था का स्वरूप	श्री० नोखेलाल शर्मा, काव्यतीर्थ	५४९
४१—वर्तमान मुस्लिम-जगत	डॉ० मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी० लि०	८०-२०४-३२७-४४५-५८१-६८१
४२—विज्ञान तथा वैचित्र्य	श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस्-सी०; तथा सम्पादक ...	११०-२४३-४८७
४३—विचित्र बदला	श्री० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'	२३८
४४—विनोद-वाटिका	श्री० मुन्शी कन्हैयालाल, एम० ए०, एल्-एल्० बी० ...	३६९-४७२-७२०
४५—विश्व-वीणा	... ...	११७-४८९-७१७
४६—वेश्या	श्री० प्रेमचन्द जी	४०४
४७—शराबी	श्री० श्यामसुन्दर खत्री, बी० ए० ...	६४३
४८—शाहपुरा स्टेट और उसके नवीन राजा ...	श्री० भगवानस्वरूप महोपदेशक ...	३५६
४९—शिल्प-कुञ्ज	कुमारी शकुन्तला देवी गुप्ता, बी० ए० ...	१०७
५०—श्रीजगद्गुरु का फ़तवा	हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द जी विरूपाक्ष	१४८-२६५-३८२-५००-६२०-७३३
५१—श्रीमती महादेवी वर्मा की कवि-दृष्टि ...	श्री० शान्तिप्रिय द्विवेदी	१८५
५२—सङ्गीत-सौरभ	श्री० नीरू बाबू	१३७-२६७-३८१-४९९-६२३-७२८
५३—सप्त द्वीप	श्री० सत्यभक्त	३३
५४—साम्राज्यवाद तथा संसार की अशान्ति ...	श्री० शङ्करदयाल श्रीवास्तव, एम० ए० ...	४७
५५—साम्यवाद की प्राचीनता	श्री० सत्यभक्त	१७९
५६—साहित्य-संसार	श्री० 'विवेचक'; श्री० रामकुमार वर्मा, एम० ए०; श्री० अन्तर्वेदी; श्री० 'गुणग्राही'	१३८-२५८-३७७-४९७-६१५-७२९
५७—साँवली बहिन	श्रीमती रूपवती त्रिवेदी	३४८
५८—सिनेमा तथा रङ्गमञ्च	श्री० सतीशचन्द्र सिंह; श्री० विक्रमादित्य सिंह निगम, बी० ए०; श्री० चन्द्रराज भण्डारी, विशारद; डॉ० धनीराम प्रेम	१४२-२६१-३६३-४७६-६०१-७१४